B.Ed - I^st YEAR

Paper - C-2

* जे० कृष्णमूर्ति के शिक्षा के स्वरूप ⇒

जे० कृष्णमूर्ति शिक्षा जगत के लिए महत्वपूर्ण एवं उपयोगी विचार प्रस्तुत किये। उनके विचारों का मुख्य संबंध यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति में शिक्षा को एक साधन मानते थे। उनका मानना था कि व्यक्ति के जीवन का प्रमुख उद्देश्य यथार्थ एवं सत्य को प्राप्त करना जो भौतिक संसार के सन्ताप को समाप्त करता है तथा [redacted] आनंद की अनुभूति करता है। अतः कृष्णमूर्ति मानव के भौतिक जीवन को सुखमय बनाते हुए आध्यात्मिक जीवन की ओर ले जाना चाहते हैं।

यथार्थ ज्ञान के लिए वह व्यक्ति के प्रयत्न को हि सर्वोपरि मानते थे। उनका मानना था कि व्यक्ति अपने स्वयं के प्रयास से हि सत्य तक पहुंच सकता है किसी गुरु या पुस्तक के माध्यम से नहीं। गुरु या पुस्तक व्यक्ति के लिए पथ-प्रदर्शक का कार्य कर सकते हैं, प्रयत्न तो मानव द्वारा ही करना होगा।

* एकाग्रता संबंधी विचार ⇒

जे० कृष्णमूर्ति एकाग्रता को यथार्थ ज्ञान के लिए उपयुक्त नहीं मानते थे। उनके अनुसार एकाग्रता के लिए व्यक्ति को प्रयास करना पड़ता है। इस प्रयास से उसके मन में अंतर्द्वन्द्व उत्पन्न होता है। संघर्ष या द्वन्द्व में मन कि स्वाभाविक प्रक्रिया में बाधा उत्पन्न होती है। उदाहरण के लिए — जैसे एक व्यक्ति अपने घर में कक्षा का ज्ञान करने के लिए चलता है जबकि दूसरी ओर उसका मन विवाह समारोह मे जाने का होता है। आध्यात्मिक ज्ञान के महत्व को ध्यान मे रखते हुए वह कक्षा स्थल तक पहुँच जाता है। वहाँ पर अपने को एकाग्र करने का प्रयास करता है परन्तु बार-बार उसका मन विवाह समारोह मे पहुंच जाता है। कक्षा के भजन संगीत में उसको विवाह का संगीत सुनायी देने लगता है।

इस प्रकार उसका चित्त अशान्त हो जाता है। इस प्रकार वह व्यक्ति अध्यात्मिक विकास से दूर हो जाता है। अतः जे० कृष्णमूर्ति एकाग्रता को यथार्थ ज्ञान के साधन के रूप में अस्वीकार कर देते हैं।

* ध्यान संबंधी विचार ⇒

जे० कृष्णमूर्ति ध्यान को यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने का प्रमुख साधन मानते थे। जे० कृष्णमूर्ति के अनुसार यथार्थ अनुभव ज्ञान को प्राप्त करने में ध्यान का अभाव नहीं होना चाहिए। अन्यथा प्रयास निरर्थक सिद्ध होंगे और व्यक्ति कभी सत्य ज्ञान को प्राप्त नहीं कर सकेगा। ध्यान ही एक ऐसा साधन है जिससे सत्य कि चेतना होती है। कृष्णमूर्ति के अनुसार ध्यान के लिए कोई विशेष प्रयास नहीं करना पड़ता है। वह अनायास ही किसी विन्दु विशेष पर केन्द्रित हो जाता है। जैसे — हम किसी बगीचे में घुमने के लिए जाते हैं तो वहाँ अनेक प्रकार के फूलों, पौधों का दर्शन करते हैं, हमारा ध्यान गुलाब के पुष्प कि ओर चला जाता है, जिसके रंग, सुगंध के बारे में सोचने लगते हैं। इसका अनुभव होने पर यह पुष्प हमारे एवं मस्तिष्क में बस जाता है।

ध्यान के संदर्भ में कृष्णमूर्ति के विचारों का विश्लेषण करने पर निम्नलिखित विशेषताएँ दृष्टिगोचर होती हैं।

1) यथार्थ ज्ञान का साधन है।
2) ध्यान इच्छा रहित है।
3) ध्यान प्रयास रहित है।
4) ध्यान एक सामान्य प्रक्रिया है।
5) ध्यान स्वनिरीक्षण का साधन है।

6] जीवन ध्यान का विषय है।
7] ध्यान का संबंध सत्य से है।
8] ध्यान समग्रता है।

* जे० कृष्णमूर्ति के अनुसार शिक्षा स्वरूप ⟹
समग्रता एवं संस्कृति की संरक्षक।
1] उचित शिक्षण एवं प्रशिक्षण व्यवस्था।
2] व्यवहारिक ज्ञान एवं नैतिकता का समावेश।
3] शिक्षा एक मित्र के रूप में।
4] सैद्धान्तिक ज्ञान एवं व्यवहारिक ज्ञान में सामंजस्य।
5] अध्यात्मिक ज्ञान से संबंधित।

06/05/2020

B.Ed - I[st] YEAR

C-7 (a)

Page: 1

Q-1 विज्ञान शिक्षण में प्रयोगशाला का महत्व

Ans:— विज्ञान शिक्षण में प्रयोगशाला के महत्व एवं उद्देश्य :—

" विज्ञान सीखने के लिए विज्ञान को करना पड़ता है। विज्ञान सीखने का दूसरा कोई रास्ता नहीं है।" - (डॉ डी०-एस० कोठारी)

विज्ञान के प्रभावी व सूक्ष्म शिक्षण के लिए आवश्यक उपकरणों सहित एक अच्छी प्रयोगशाला आवश्यक है। पिछले वर्षों में माध्यमिक स्तर पर विज्ञान के तथ्यों से भर देना नहीं है, अपितु उनमें प्रयोगात्मक योग्यता, परीक्षणों की तकनीक निर्माण, वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास, रुचि, प्रशंसा आदि का विकास करना है। यह तभी प्राप्त किया जा सकता है यदि विद्यार्थी को एक वातावरण में अपने हाथों से कार्य करने का मौका प्राप्त हो जिससे विज्ञान शिक्षण प्रसारित हो सके। विज्ञान प्रयोगशालाओं का महत्वपूर्ण कार्य विद्यार्थियों की समझ को गहरा करना है कि वैज्ञानिक सिद्धांत व प्रयोग उनके अपने प्राकृतिक वातावरण से

नजदीकी संबंधित है। प्रयोगशाला में छात्र अनुमान में विवेक लगाना, आँकड़ों के सबूत की जाँच, सावधानी की महत्ता की समझ व काम लेने में योग्यता को शीघ्रता से सीख लेते हैं।

विज्ञान में प्रयोगशालाओं को निर्देशों के समग्र हिस्से के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। इसलिए आपने सभी रूपों में प्रयोगशाला विज्ञान शिक्षण के उद्देश्यों की प्राप्ति में सहायता देती है जो विज्ञान के क्षेत्रों में आगामी विकास को सहायता देती है। विद्यालयों में विज्ञान प्रयोगशालाओं का निर्माण करते समय, विज्ञान शिक्षक या विज्ञान शिक्षाविद को इसे श्रेष्ठ शैक्षणिक उद्देश्यों के लिए स्वीकृत व मानकीकृत योजना के आधार पर बनाने के लिए वास्तुविद का सहयोग लेना चाहिए।

प्रयोगशाला का महत्व

→ प्रयोगशाला का महत्व निम्न प्रकार है :—

(i) सामग्री व उपकरण रखने का स्थान :—
विज्ञान विषयों में अध्ययन व अध्यापन हेतु प्रयोग व परीक्षणों की आवश्यकता पड़ती

इन प्रयोग व परीक्षणों के लिए अनेक प्रकार के उपकरण, वस्तुओं और साथ सामग्री की आवश्यकता पड़ती है। इस सामग्री और उपकरणों को रखने तथा विद्यार्थियों को व्यक्तिगत रूप से निरीक्षण और प्रयोग करने की सुविधा प्रदान करने हेतु प्रयोगशाला की आवश्यकता अनुभव की जाती है। यहाँ सभी प्रकार की आवश्यकता वैज्ञानिक सामग्री एवं उपकरणों को, सुरक्षित रखा जा सकता है।

(ii) उपलब्धि की भावना :—
प्रयोगशाला वह स्थान है जहाँ छात्र स्वतंत्र रूप से निष्कर्ष निकाल सकते है। इससे उनमें इस उपलब्धि की भावना का निर्माण होता है।

(iii) आत्म-विश्वास व अनुशासन की भावना :—
प्रयोगशाला में छात्र सुचारु सुचारु रूप से कार्य करते है। शिक्षक का दायित्व केवल मार्ग-दर्शन होता है। स्वयं कार्य करने से उनमें आत्म-विश्वास की भावना दृढ़ होती है। वह स्वयं निष्कर्षों का निरूपण करते है। जब वह निष्कर्ष सत्य सिद्ध होता है तो उनमें आत्म-अनुशासन और आत्म-विश्वास की भावना दृढ़ होती है।

(iv) सामाजिकता का विकास :—

प्रयोगशाला में बालक सामूहिक रूप से कार्यरत रहते है। अतः उनमें परस्पर सहयोग और स्वस्थ स्पर्धा की भावना बढ़ती है। वह स्वयं जिसके फलस्वरूप सामाजिकता के गुणों का विकास होता है, जो भावी जीवन में समायोजन में अत्यधिक सहायक होते है।

v) समय व श्रम की बचत :-
प्रयोगशाला का प्रारूप सुनियोजित होता है। इस कारण विभिन्न क्रियाओं से संबंधित साधन एक स्थान पर उपलब्ध हो जाता है, जिसके फलस्वरूप किसी भी क्रिया के विभिन्न पक्षों के अध्ययन हेतु विभिन्न स्थानों पर जाने से बचा जा सकता है। इससे समय व श्रम की बचत होती है। एवं उपकरणों के टूट-फूट की सम्भावना भी कम हो जाती है।

vi) उचित वातावरण :-
विज्ञानों के अध्ययन के लिए उचित वातावरण तैयार करने में प्रयोगशाला महत्वपूर्ण भूमिका अदा करती है। जब विद्यार्थी विभिन्न प्रकार की वैज्ञानिक सामग्री एवं उपकरणों को देखते हैं तब उनके मन में जिज्ञासा उत्पन्न होती है। वे उनका प्रयोग करने तथा देखने में विशेष आनंद प्राप्त करते है।

(viii) दृष्टिकोण वैज्ञानिक बनाना :-
विद्यार्थियों में वैज्ञानिक ढंग से ज्ञान ग्रहण करने और उनके दृष्टिकोण को वैज्ञानिक बनाने में भी प्रयोगशाला सहायक है। इस प्रकार वैज्ञानिक तथ्यों, नियमों और सामान्य सिद्धांतों के सत्यापन हेतु प्रयोगशाला की अनिवार्यता स्वयं सिद्ध है। यदि कार्यकारण संबंध स्थापित करने, रचनात्मक शक्ति का विकास करने और समस्या - समाधान हेतु प्रयोग किए जाते है तो प्रत्येक विद्यालय में सुनियोजित प्रयोगशाला का होना अनिवार्य है।

→ प्रयोगशाला कार्य के लक्ष्य एवं उद्देश्य

विज्ञान - शिक्षण में सैद्धांतिक व प्रायोगिक कार्यों के लक्ष्य एवं सिद्धांत को पृथक रूप में नहीं देखना चाहिए। यथार्थ में यह एक दूसरे के पूरक होते है। अतः इनका समन्वित प्रयोग वांछनीय है। सिद्धांत व प्रयोग के मध्य ऐसी खाई ने यूनेस्को को पारस्परिक प्रयोगशालाओं के स्थान पर अध्ययन कक्ष के सुझाव देने को बाध्य किया। फिर भी विज्ञान प्रयोगशालाओं को निम्न उद्देश्य पूर्ति हेतु प्रयोग किया जा सकता है।

(i) अमूर्त वैज्ञानिक अवबोध मूर्त रूप देने के लिए।

(ii) वैज्ञानिक कौशल, अभिरुचि एवं रुचि के विकास के लिए

(iii) वैज्ञानिक प्रत्यय एवं सिद्धांतों के विकास के लिए।

(iv) वैज्ञानिक विधि में प्रशिक्षण के लिए।

(v) वातावरण के प्रति चेतना व जिज्ञासा के विकास के लिए

27/4/20

C-10

समावेशी शिक्षा के क्षेत्र:—

1- अस्थिबाधित बालक
2. श्रवणबाधित बालक
3. दृष्टिबाधित या एक आँख वाले बालक
4. मानसिक मन्दित बालक
5. विभिन्न प्रकार से अपंग बालक (बहुबाधित)
6. अधिगम असमर्थी बालक
7- मूक-बधिर बालक

उपर्युक्त रूप से असमर्थ बालकों के लिए समावेशी शिक्षा इन्हें समर्थ बनाने का प्रयास करती है।

समावेशी शिक्षा की चुनौतियां:—

① शिक्षा की सर्वव्यापकता — समावेशी शिक्षा सार्वभौमिक शिक्षा के लिए किये जा रहे प्रयासों में योगदान देती है।

② संवैधानिक उत्तरदायित्वों का निर्वहन —
समावेशी शिक्षा बिना किसी भेदभाव के सभी को शिक्षा प्राप्ति का अवसर प्रदान करती है।

③ राष्ट्र का विकास —
समावेशी शिक्षा प्रत्येक नागरिक को उसकी क्षमता के अनुसार उसको शिक्षित करने का प्रयास करती है। और जब किसी राष्ट्र का प्रत्येक नागरिक अपनी क्षमता और आवश्यकतानुसार शिक्षित होगा तो उस राष्ट्र का विकास ही होगा।

④ निर्धनता की समाप्ति:—
समावेशी शिक्षा निर्धनता को दूर करने में सहायक है। क्योंकि जब अक्षम व्यक्ति भी शिक्षित और हुनरमन्द होगा तो गरीबी दूर होगी।

(5) समाज के विकास एवं सशक्तिकरण में सहायक (Development & Empowerment of society)

समावेशी शिक्षा के माध्यम से समाज के प्रत्येक बालक को सुयोग्य एवं समझदार बनाने का प्रयत्न किया जाता है। ताकि वह अपनी योग्यता एवं बौद्धिक क्षमता का प्रयोग समाज कल्याण के लिए कर सके।

(6) आधुनिक तकनीकों का प्रयोग (Utilization of Latest Technologies)

समावेशी शिक्षा में कम्प्यूटर, इंटरनेट, सेटेलाइट चैनल जैसे आधुनिक उपकरणों के प्रयोग पर बल दिया जाता है। विभिन्न तकनीकों से बालकों को परिचित कराया जाए। जो समय पाकर शिक्षा में एक मील का पत्थर साबित होगा।

(7)- नागरिकता के उत्तम गुणों का विकास :- Development of Desirable Traits for citizenship)

बालकों में उत्तम गुणों के विकास में समावेशी शिक्षा काफी सहायक है। जिससे बालक एक उत्तम नागरिक बन सकता है। क्योंकि समावेशी शिक्षा पारस्परिक सामाजिक क्रिया तथा व्यवहार में गतिशीलता तथा समायोजन पर बल देती है।

(8) सामाजिक समानता का उपयोग एवं प्राप्ति :- Realization of social Equality)

समावेशी शिक्षा प्रणाली के द्वारा समाज के असक्त, अक्षम व्यक्तियों को जीवन जीने तथा सामाजिक समानता से व्यवहारिक रूप से फायदा उठाने की आशा की जा सकती है।

(9) शिक्षा का स्तर बढ़ाना (To Improve the Quality of Education)

(10) व्यक्तिगत जीवन का विकास (Individual Life Development)

(11) परिवार के लिए सांत्वना एवं संतोष (consoling and soothing Efect for the family)

(12) समावेशी शिक्षा : एक प्रथम स्तरीय प्रयास (Inclusive Education : A first Level Effort)

18.05.2020

C-11 (second year)

"पर्यावरण शिक्षा" पर्यावरण सुरक्षा के उद्देश्यों को प्राप्त करने का साधन है। पर्यावरण शिक्षा किसी विज्ञान अथवा विषय के अध्ययन की अलग शाखा नहीं है। इसे जीवन पर्यन्त सम्पूर्ण शिक्षा के अन्तर्गत चलाया जाना चाहिए।

हमारे देश में पर्यावरण शिक्षा औद्योगिक संस्थाओं से जीवन बचाने के संकट से बचने की शिक्षा है और पर्यावरण की सुरक्षा के लिए लोगों के ज्ञान और व्यवहार में जीवनपर्यन्त परिवर्तन लाने की ओर उद्देशित है। इस प्रकार पर्यावरण शिक्षा पृथ्वी पर रहने वाले प्राणी जगत को उनपर आने वाली सम्भावित विपदाओं से बचा उन्हें सुखमय जीवन देने का प्रयास करता है साथ ही उन्हें इस योग्य बनाना है कि वे आगे आने वाली समस्याओं को पूर्व में ही जान सकें और उसका निवारण कर सकें।

पर्यावरण शिक्षा के लक्ष्य एवं उद्देश्य :-

पर्यावरण शिक्षा के लक्ष्य एवं उद्देश्यों के निर्धारण का प्रारम्भ IEEP द्वारा आयोजित प्रथम अन्तर्राष्ट्रीय पर्यावरण शिक्षा कार्यगोष्ठी में पर्यावरणीय शिक्षा के कार्यक्रम की दिशा एवं मार्गदर्शन बिन्दुओं को अंतिम स्वरूप प्रदान किया विश्व के 60 राष्ट्रों के विद्वानों ने शोध प्रपत्रों के आधार पर विश्व के 5 क्षेत्रों अफ्रीका, अरब राज्य, एशिया, यूरोप उत्तरी एवं दक्षिणी अमेरिका के प्रतिनिधियों ने सभी ~~क~~ स्तर के विद्यार्थियों एवं युवकों के लिए पर्यावरण शिक्षा के लक्ष्य एवं ~~वि~~ उद्देश्य निम्न हो सकते हैं।

पर्यावरण शिक्षा के लक्ष्य

① ~~[illegible]~~ शहरी एवं ग्रामीण क्षेत्र में आर्थिक, सामाजिक राजनैतिक और पारिस्थितिकी की परस्पर अवलम्बिता के बारे में स्पष्ट जानकारी का विकास करना और इनमें ~~[illegible]~~ रुचि बनाए रखना।

2- प्रत्येक व्यक्ति को पर्यावरण संरक्षण और सुधार के लिए वांछनीय ज्ञान, मूल्य, मनोवृत्ति, वचन बद्धता और कौशल प्राप्त करने के अवसर प्रदान करना।

3- पर्यावरण के प्रति व्यक्तिगत सामुहिक एवं सामाजिक सभी में नये व्यवहारिक दृष्टिकोण का निर्माण हो।

पर्यावरण शिक्षा के उद्देश्य

1:- जागरूकता
2:- पर्यावरण के प्रति ज्ञानात्मक बोध
3:- सहभागिता
4:- संसाधन संरक्षण
5:- प्रदुषण रोकने पर बल
6:- पर्यावरण के साथ समायोजन
7:- प्राकृतिक संसाधनों के दोहन पर रोक
8:- पर्यावरणीय समस्या समाधान
9:- भविष्य में मानव जाति के प्रति सम्वेदनशीलता
10:- (मुल्यांकन एवं कुशलता) का प्रयोग।

पर्यावरणीय शिक्षा के क्षेत्र:-

प्राकृतिक

1- प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण
2:- वन्य जीवों का संरक्षण
3:- वन संम्पदा महत्व एवं संरक्षण
4:- जल संरक्षण
5:- खनिज संरक्षण
6:- पारिस्थितिकी तन्त्र

मानवनिर्मित

1 विभिन्न प्रकार के प्रदुषण कारण एवं निवारण
2:- औद्योगिकीयकरण
3:- नगरीय एवं शहरीकरण
4:- उर्जा के वैकल्पिक स्रोत
5:- कुड़ा-कचरा प्रबंधन
6:- जनसंख्या वृद्धि पर रोक
7:- पर्यावरण एवं मानव सामंजस्य
8:- जन स्वास्थ्य एवं जीवन यापन